

परिष्कार प्रतिबिंब

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार



बिहार दिवस





महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

मयि श्री: श्रयतां यशः

फरवरी 2022 - मार्च 2022 (संयुक्तांक)

2

कुलगुरु की लेखनी से

परिवर्तन प्रकृति का मौलिक गुण धर्म है, शाश्वत नियम एवं चिरन्तन सत्य है। सम्पूर्ण मानवता ने इसी शाश्वत नियम से तादात्म्य स्थापित करते हुए विकास के नूतन प्रतिमान गढ़े। वसन्त ऋतु, प्रकृति के इसी परिवर्तनशील स्वभाव का सुकोमल प्रकटीकरण है। जब धरा नव पल्लव, नव चेतना, नवोल्लास और नवोन्मेष से आच्छादित होकर नवीन रूप ग्रहण करती है। सम्पूर्ण सृष्टि आनन्द मगन होकर परमानन्द से सम्मिलन को आतुर होती है। प्रकृति सुंदरी के मनोहारी श्रृंगार की अनुपम छटा एवं लालित्य से सृष्टि उद्भासित होने लगती है तो मानवता बासंती चोला धारण करती है। वसन्त प्रकृति की सकारात्मक अभिवृत्तियों के उद्दीपन की ऋतु है। एक ओर जहाँ हमारा देश कई नवीन परिवर्तनों का साक्षी बना है वहीं दूसरी ओर बिहार की यह पुण्य सलिला धरा अपना स्थापना दिवस भी हर्षोल्लास के साथ मना रही है। बिहार आदि काल से

ही एक भौगोलिक केन्द्र से अधिक अपनी बौद्धिकता, आध्यात्म एवं गौरवशाली अतीत के लिए विख्यात है। यह भूमि विश्व के दो लोकप्रिय धर्मों की जन्म स्थली रही है। बिहार की पवित्र भूमि पर महात्मा गांधी के नाम पर स्थापित हमारा विश्वविद्यालय भी इस बौद्धिक सम्पदा को पुनः वैश्विक पटल पर स्थापित करने को कृतसंकल्पित है और सतत् इस दिशा में प्रगतिशील है। हमारे शिक्षार्थी बिहार की बौद्धिक समृद्धि को विश्व के कोने कोने तक प्रसारित करने के उद्यम में सन्नद्ध हैं। सम्पूर्ण बिहार एवं हमारे विश्वविद्यालय परिवार के लिए यह गौरव एवं उल्लास का प्रसंग है कि 22 मार्च को बिहार दिवस मनाने को हम सभी प्रस्तुत हैं। विश्वविद्यालय परिवार की ओर से सभी को बिहार दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्रो. संजीव कुमार शर्मा
माननीय कुलपति



सामाजिक दशाओं पर पुनर्विचार कर भविष्य को नयी दिशा प्रदान करेंगे - प्रो.संजीव कुमार शर्मा



‘अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस’ के अवसर पर विश्वविद्यालय एवं वैदेही महिला अध्ययन केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में सम्मान समारोह का आयोजन महात्मा बुद्ध परिसर स्थित आचार्य बृहस्पति सभागार में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो.संजीव कुमार शर्मा ने की। अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने कहा कि भारत की चेतना ‘मिथुनयुक्त’ है। ‘अर्धनारीश्वर’ भाव से अनुप्राणित भारतभूमि सम्पूर्ण विश्व के लिए आदर्श है। आज हमारे समक्ष कुछ चुनौतियाँ हैं। वर्तमान की चुनौतियों को स्वीकारते हुए हमें सुरक्षित समाज बनाना है। सुजन के विविध आयामों को समर्थ बनाते हुए समाज को गति प्रदान करना है। विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो.शहाना मजूमदार ने अतीत,वर्तमान और भविष्य के संदर्भों के साथ सभा को संबोधित किया। प्रो.मजूमदार ने कहा कि लैंगिक समानता की अवधारणा

मात्र किताबों का हिस्सा नहीं, बल्कि चेतना निर्मिति का सत्य है। हमें इस सत्य को जीवन का अंग मानते हुए स्व-परिवर्तन से जुड़ना होगा। हमें गार्गी,अपाला,लोपामुद्रा आदि की चेतना को फिर से जीवित करना होगा। स्वागत उद्बोधन देते हुए कार्यक्रम की संयोजिका एवं ‘वैदेही महिला अध्ययन केंद्र’ समन्वयक डॉ. सरिता तिवारी ने केंद्र की स्थापना एवं लक्ष्य की मूलभूत भावना से सभी को परिचित कराया। डॉ. तिवारी ने कहा कि भारत की धरती समानता की धरती रही है। गार्गी,अपाला इसकी प्रमाण हैं। समय के साथ हमने आने वाली हर चुनौती का सामना किया है और भविष्य को ‘शुभ सुंदर कोमल’ बनाने के लिए हम कृतसंकल्पित हैं। इस दौरान विश्वविद्यालय को अपनी सेवा से समृद्ध कर रही ‘मातृशक्ति’ शिक्षकों, सहयोगियों को शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रश्मि श्रीवास्तव ने एवं संचालन डॉ. रश्मिता रे ने किया।



अटल बिहारी वाजपेयी केंद्रीय पुस्तकालय में तीन दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित

विश्वविद्यालय के महात्मा बुद्ध परिसर स्थित अटल बिहारी वाजपेयी केंद्रीय पुस्तकालय द्वारा आयोजित तीन दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का शुभारंभ माननीय कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा के कर कमलों से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने की। वहीं प्रति कुलपति प्रो. जी.गोपाल रेड्डी का विशेष शत्रिध्व भी प्राप्त हुआ। प्रदर्शनी के संयोजक प्रो. रंजीत कुमार चौधरी ने पुष्प गुच्छ देकर सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुआ। साथ ही माननीय कुलपति एवं अतिथियों ने भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं भारतीय पुस्तकालय

सूचना विज्ञान के जनक डॉ. एस आर रंगनाथन की प्रतिमा पर भी माल्यार्पण किया। देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये हुए पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक जिनमें साहित्य भवन, वाणी प्रकाशन, इंडिका पब्लिशर्स, मेट्रो पब्लिशर्स, ऋषभ बुक्स, आदि बुक्स, मनकिन पब्लिशर्स,अमित बुक्स डिपो, बुक्स इमपोरियम,आहूजा पब्लिशर्स, सान्निध्य पब्लिशर्स इत्यादि प्रकाशकों ने विभिन्न विषयों से संबंधित किताबों को शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए प्रदर्शित किया। माननीय कुलपति एवं अतिथियों ने सभी प्रकाशनों के स्टॉल पर जाकर समीक्षा की एवं नव प्रकाशित पुस्तकों का अवलोकन किया।

माननीय कुलपति ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि पुस्तक प्रदर्शनी के माध्यम से विभिन्न विषयों पर शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन हो सकेगा तथा इसके माध्यम से उन्हें शोध कार्यों में भी सहायता मिलेगी। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विशेष कार्य अधिकारी प्रो. राजीव कुमार, परिसर निदेशक प्रो. आशीष श्रीवास्तव, कुलानुशासक प्रो. प्रणवीर सिंह एवं संकायों, विभागों के अध्यक्ष उपस्थित रहे। वेबसाइट प्रभारी डॉ. नरेन्द्र सिंह, जन संपर्क अधिकारी सुश्री शेफालिका मिश्रा, केंद्रीय पुस्तकालय के सदस्य रोबिन बालियान, रोहित पीलवान, शेखर तथा विभिन्न विभागों के विद्यार्थी एवं शोधार्थी भी मौजूद रहे।



महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

महि श्री: श्रुतां यशः

फरवरी 2022 - मार्च 2022 (संयुक्तांक)

3

देश के 7 केंद्रों पर शांतिपूर्ण संपन्न हुई पीएचडी प्रवेश परीक्षा



विश्वविद्यालय द्वारा पीएचडी पाठ्यक्रमों के लिए 13 मार्च को प्रवेश परीक्षा आयोजित की गई। ये परीक्षाएं तीन पालियों में मोतिहारी, पटना, नई दिल्ली, कोलकाता, वाराणसी, लखनऊ, गुवाहटी समेत कुल सात केंद्रों पर आयोजित हुई। विषयानुसार मास कम्प्यूटेशन में 56, जैव प्रौद्योगिकी में 39, कंप्यूटर विज्ञान में 31, अंग्रेजी में 53, गांधीयन एवं शांति अध्ययन में 53, प्रबंध विज्ञान में 45, गणित में 35, वनस्पति विज्ञान में 23, शैक्षिक अध्ययन में 66, हिंदी में 31, भौतिकी में 18, राजनीति विज्ञान में 83, रसायन में 25, वाणिज्य में 76, संस्कृत में

50, समाज शास्त्र में 31 तथा जीव विज्ञान में 51 परीक्षार्थी उपस्थित रहे। प्रवेश परीक्षा के प्रथम पाली में कुल 277, दूसरी पाली 258 तथा तीसरी पाली में कुल 233 परीक्षार्थी उपस्थित थे। कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में मोतिहारी समेत सभी केंद्रों पर परीक्षा सकुशल हुई। परीक्षा के आयोजन में विश्वविद्यालय के ओएसडी (प्रशासन) प्रो. राजीव कुमार, प्रो. संतोष त्रिपाठी, प्रो. पवनेश कुमार, प्रो. प्रसून दत्त सिंह, एसओ दिनेश हुड्डा सहित शिक्षकगण, अधिकारीगण एवं कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

तीन दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का समापन, प्रो. राजीव कुमार ने की अध्यक्षता



विश्वविद्यालय के बनकट स्थित अटल बिहारी वाजपेयी केन्द्रीय पुस्तकालय में आयोजित तीन दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का समापन विशेष कार्य अधिकारी प्रो. राजीव कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। स्वागत उद्बोधन कार्यक्रम संयोजक प्रो. रंजीत कुमार चौधरी ने दिया। प्रो. राजीव कुमार ने विश्वविद्यालय में इस पुस्तक प्रदर्शनी के आयोजन को सुखद बताया। उन्होंने कहा कि इस प्रदर्शनी के माध्यम से विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों का ज्ञानवर्धक एवं रोचक पुस्तकों से साक्षात्कार हुआ। पुस्तक प्रदर्शनी में देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए हुए प्रकाशक एवं वितरक जिनमें साहित्य भवन, वाणी प्रकाशन, इंडिका पब्लिशर्स, मेट्रो पब्लिशर्स, ऋषभ बुक्स, आदि बुक्स,

मनकिन पब्लिशर्स, अमित बुक्स डिपो, बुक्स इमपोरियम, आहूजा पब्लिशर्स, सावित्री पब्लिशर्स जैसे अनेक ख्यातिलब्ध प्रकाशकों ने विविध विषयों से संबंधित पुस्तकों को शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए प्रदर्शित किया। कार्यक्रम में महात्मा बुद्ध परिसर के निदेशक प्रो. आशीष श्रीवास्तव, कुलानुशासक प्रो. प्रणवीर सिंह, विभिन्न संकायों एवं विभागों के अध्यक्ष तथा शिक्षकगण उपस्थित रहे। साथ ही वेबसाइट प्रभारी डॉ. नरेन्द्र सिंह, जनसंपर्क अधिकारी सुश्री शेफालिका मिश्रा, डॉ. मुकेश, डॉ. रश्मि, पुस्तकालय के सदस्य रोबिन बालियान, रोहित, शेखर, अनिल कुमार, पिनजे एवं विश्वविद्यालय के शोधार्थी व विद्यार्थी मौजूद रहे।



शैक्षिक अध्ययन विभाग में एक दिवसीय परिचर्चा का आयोजन

विश्वविद्यालय के शैक्षिक अध्ययन विभाग द्वारा ड्राफ्ट डॉक्यूमेंट : सतत वैश्विक विकास पर एक दिवसीय परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. शारदा सिन्हा (डीटीई, एन.सी.ई.आर.टी) शामिल हुईं। उन्होंने 50 घंटे क्षमता संवर्धन विकास के दस्तावेज से जुड़े पहलुओं को और उसके उद्देश्य को भी साझा किया। विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने कहा कि शिक्षक के सतत वैश्विक विकास की रूपरेखा भारत के विभिन्नता को ध्यान

में रखकर बनाया जाए जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जा सके। मुख्य वक्ता के तौर पर डॉ. जितेंद्र कुमार पाटीदार (डी.टी.ई., एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली) मौजूद रहे। उन्होंने सतत वैश्विक विकास शिक्षक की आवश्यकता और शिक्षक की स्वायत्तता पर प्रकाश डाला। प्रो. पाटीदार ने अपने वक्तव्य में संदर्भित आवश्यकताओं की पहचान अलग-अलग स्तर पर की। परिचर्चा में उपस्थित सहायक आचार्य डॉ. मुकेश कुमार ने शिक्षकों के व्यवहारिक पक्ष पर जोर दिया,

वहीं सहायक आचार्य डॉ. पाथलोथ ओमकार ने अपनापन, विश्वास जैसे संस्कृति को बढ़ावा देने की बात कही। वहीं सहायक आचार्य डॉ. मनीषा रानी ने बताया कि शिक्षक का सतत वैश्विक विकास वर्किंग कल्चर अच्छा होने पर ही संभव है। कार्यशाला में शिक्षा संकाय के शोधार्थियों ने भी अपना योगदान देते हुए मूलभूत सुझाव दिए, जिससे कि ड्राफ्ट डॉक्यूमेंट और सतत वैश्विक विकास से शिक्षक शिक्षा क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण बदलाव किया जा सके। संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन सहायक आचार्य डॉ. रश्मि श्रीवास्तव ने किया।

विद्यार्थियों ने यूजीसी नेट परीक्षा में सफलता का परचम लहराया



विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों ने एक बार फिर यूजीसी नेट परीक्षा में सफलता का परचम लहराया है। विश्वविद्यालय के 12 विद्यार्थी जेआरएफ जबकी 41 विद्यार्थी नेट परीक्षा में सफल हुए हैं। विश्वविद्यालय की जनसंपर्क अधिकारी सुश्री शेफालिका मिश्रा ने बताया कि कुल 53 विद्यार्थी यूजीसी नेट परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हैं। सफलता प्राप्त करने वालों में सबसे ज्यादा संस्कृत विभाग के 10 विद्यार्थी शामिल हैं। दूसरे स्थान पर शिक्षा विभाग के 7 विद्यार्थियों ने बाजी मारी है। इसके अलावा तीसरे स्थान पर अर्थशास्त्र और हिंदी विभाग है जिसमें 6 विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों ने यूजीसी नेट में सफलता पाई है।

जबकि मीडिया अध्ययन विभाग के 4 और राजनीतिक शास्त्र विभाग से 5, पुस्तकालय अध्ययन विभाग से 5, सामाजिक कार्य विभाग 4, वाणिज्य विभाग से 3, अंग्रेजी विभाग से 2 तथा समाजशास्त्र विभाग से 1 विद्यार्थी ने सफलता प्राप्त की है। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले सभी विद्यार्थियों के साथ उनके संकायाध्यक्षों को भी बधाई दी। प्रो. शर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय अपने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के अथक परिश्रम से दिन प्रतिदिन नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। उन्होंने कहा कि, इस सफलता से अन्य विद्यार्थियों को भी प्रेरणा मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस उल्लेखनीय

उपलब्धि से हमारे नए फलते-फूलते विश्वविद्यालय का नाम ऊंचा हुआ है तथा आत्मविश्वास भी बढ़ा है। माननीय कुलपति ने विश्वविद्यालय से ऊर्जा, बुद्धि और दृढ़ संकल्प के साथ अकादमिक उत्कृष्टता के लिए प्रयास जारी रखने की आशा व्यक्त की है। वही विवि के प्रति कुलपति प्रो. जी. गोपाल रेड्डी ने भी सफल विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को शुभकामनाएं प्रेषित की। विवि के ओएसडी प्रशासन प्रो. राजीव कुमार के साथ ही विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने यूजीसी नेट परीक्षा में सफल सभी विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को बधाई देते हुए उनके मंगल भविष्य की कामना की।



महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

मयि श्री: श्रयतां यशः

फरवरी 2022 - मार्च 2022 (संयुक्तांक)

4

ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स फॉर टीचर एजुकेटर का आयोजन



विश्वविद्यालय एवं यू.जी.सी. , एच.आर. डी. सी. , रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर के शिक्षा संकाय के संयुक्त तत्वाधान में ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स फॉर टीचर एजुकेटर का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में बतौर मुख्य संरक्षक प्रो. कपिलदेवमिश्र, कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, मध्यप्रदेश व विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा मौजूद रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के तौर पर प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, कुलपति, महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर प्रो. राघवेंद्र प्रसाद तिवारी, कुलपति पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय तथा डॉ. हर्षद पटेल, कुलपति, आई आई टी ई, गांधी नगर, गुजरात की उपस्थिति रही। सह संरक्षक की भूमिका में विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. जी गोपाल रेड्डी मौजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना से हुआ। अतिथियों का औपचारिक स्वागत यू.जी.सी. एच.आर. डी. सी. रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के निदेशक प्रो. कमलेश मिश्र ने किया। वहीं विषय प्रवर्तन कार्यक्रम निदेशक प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने किया। प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने विश्वविद्यालय आयोग का जिक्र करते हुए कहा कि शिक्षक को तैयार करने में जिस गहन तैयारी की जरूरत होती है, वैसी तैयारी करने में हम असफल हुए हैं और एन सी एफ टी इ 2005 भी अपनी बात यही से प्रारम्भ करता है। उन्होंने कहा कि शिक्षक शिक्षा को नई दिशा देने का समय आ गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पांच आधारभूत स्तंभ समानता, पहुँच, जवाबदेही, गुणवत्ता, सामर्थ्य की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षकों के प्रति आदर सम्मान के भाव को पुनर्जीवित करना होगा, सर्वोत्तम राष्ट्र बनाने के लिए शिक्षकों में प्रेरणा और सशक्तिकरण की आवश्यकता है। कार्यक्रम के सम्मानित अतिथि डॉ. हर्षद पटेल ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह समय बदलाव का है क्योंकि हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का क्रियान्वयन व्यापक स्तर पर करना

है। उन्होंने कहा कि जब प्रारम्भिक शिक्षा में बदलाव होता है तब शिक्षक शिक्षा में बदलाव आवश्यक हो जाता है इस दृष्टि से यह पुनश्चर्या कार्यक्रम मील का पत्थर साबित होगा। महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि नई शिक्षा नीति के उद्घोषणा के बाद भारत के विविध भाषाओं को लेकर एक विश्वास, स्वीकृति, और स्वागत का वातावरण निर्मित हुआ है परन्तु आज तक हम अपनी भाषा को उच्चतर शिक्षा एवं अनुसंधान की भाषा नहीं बना सके। जिसके फलस्वरूप विद्यार्थी अपनी जड़ों से कट रहा है। उन्होंने अपने वक्तव्य में घनश्याम दास बिड़ला एवं अब्राहम लिंकन का अपने पुत्रों को लिखे पत्र की चर्चा करते हुए उन तथ्यों पर प्रकाश डाला जब अभिभावक अपने पाल्यों को शिक्षण संस्थान में भेजता है तो वह किन किन उम्मीदों को पालता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. कपिल देव मिश्र ने कहा कि देश को अनुभव कार्य के साथ साथ चरित्र, आचरण, मूल्य आदि की आवश्यकता है। प्रो. मिश्र ने कहा कि यह समय की मांग है कि शिक्षा में प्रगतिशील तकनीकी, वैज्ञानिक पद्धति, कौशल युक्त पाठ्यक्रम हो परन्तु मातृ देवों भव पूत देवों भव की संवेदनशीलता भी हो। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राजेश्वरी राना, उप निदेशक, यू.जी.सी. एच.आर. डी. सी., रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के द्वारा किया गया। कार्यक्रम के प्रथम तकनीकी सत्र में शिक्षा जगत के मूर्धन्य विद्वान्, दार्शनिक, शिक्षाविद तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के सदस्य प्रो. उमेश चंद्र का ओजश्री पूर्ण व्यख्यान हुआ। कार्यक्रम से लगभग 50 सहभागी आभासी मंच पर उपस्थित थे। मुख्य रूप से सह आचार्य डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. रश्मि श्रीवास्तव, डॉ. मनीषा रानी, डॉ. पाथलोथ ओमकार तथा डॉ. संजीव कुमार पाण्डेय, सहायक निदेशक, मानव संसाधन विकास केंद्र, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर आदि उपस्थित थे। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

वनस्पति विज्ञान विभाग के शोधार्थी कौशल 'अवसर पुरस्कार' से सम्मानित



विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के शोधार्थी कौशल को उनकी उत्कृष्ट शोध कहानी के लिए प्रसिद्ध 'अवसर पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार जन आबादी में विज्ञान को बढ़ावा देने और लोकप्रिय बनाने के लिए डीएसटी द्वारा एक शानदार पहल है। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर शोधार्थी कौशल एवं वनस्पति विज्ञान विभाग के शिक्षकों को हार्दिक बधाई दी है। उन्होंने उन छात्रों और संकाय सदस्यों पर प्रसन्नता व्यक्त की, जो विश्वविद्यालय को कई सम्मान और प्रतिष्ठा दिलाने के लिए लगन से काम कर रहे हैं, जिससे उज्ज्वल भविष्य के द्वार खुल रहे हैं। प्रो. शर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के बदौलत दिन प्रतिदिन नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। प्रतिकुलपति प्रो. जी गोपाल रेड्डी ने भी पुरस्कृत शोधार्थी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने ने कहा कि हमारे विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की उपलब्धियां नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए प्रेरणाश्रोत का काम करेगी। साथ ही ओएसडी प्रशासन प्रो. राजीव कुमार, प्रो. शहाना मजूमदार, चीफ प्रॉक्टर प्रो. प्राणवीर सिंह समेत विश्वविद्यालय के अन्य संकायों के शिक्षक, अधिकारीगण एवं विद्यार्थियों ने भी अपनी शुभकामनाएं दी।

विद्यार्थियों ने किया पोषण वाटिका का भ्रमण



विश्वविद्यालय के 'परिसर भ्रमण' कार्यक्रम के अंतर्गत 'स्टेपिंग स्टोन्स एकेडमी' और 'जवाहर इंटरनेशनल स्कूल' के विद्यार्थियों ने पोषण वाटिका का भ्रमण किया। गांधी भवन परिसर स्थित वाटिका जैविक खेती का प्रतिनिधित्व करती है। स्वास्थ्य, शारीरिक एवं मानसिक विकास की दृष्टि से यह वाटिका खान-पान प्रणाली का उत्तम उदाहरण है। वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग के अधिष्ठाता प्रो. पवनेश कुमार ने कार्यक्रम का संचालन किया। उन्होंने कहा कि पोषण वाटिका विद्यार्थियों को कृषि और

भारतीय संस्कृति के बिना हमारा संपूर्ण विकास संभव नहीं - विकास वैभव



आईपीएस विकास वैभव (विशेष सचिव गृह, बिहार सरकार) का विश्वविद्यालय के बनकट स्थित स्थायी परिसर में आगमन हुआ, जिनका स्वागत गांधी भवन परिसर के निदेशक प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने पुष्पगुच्छ भेंट करके किया। विकास वैभव ने गांधी भवन परिसर स्थित महात्मा गांधी की मूर्ति पर माल्यार्पण करके विश्वविद्यालय का दिग्दर्शन किया। प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने विकास वैभव को विश्वविद्यालय की अब तक की प्रगति यात्रा तथा शैक्षणिक एवं अकादमिक उपलब्धियों से अवगत कराया। विश्वविद्यालय के परिभ्रमण के क्रम में उन्होंने विश्वविद्यालय की भित्तियों पर लगे संस्कृत की सूक्तियों तथा भारतीय परंपरा के अनुरूप कक्षों

के नामों को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। उनका कहना था कि भारतीय संस्कृति के बिना हमारा संपूर्ण विकास संभव नहीं। विकास वैभव ने विश्वविद्यालय के आगे के विकास क्रम में भी जुड़े रहने की अपनी भावना से अवगत कराया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलानुशासक प्रो. प्राणवीर सिंह, सह-कुलानुशासक डॉ. अनिल प्रताप गिरि, संस्कृत विभाग के सह आचार्य डॉ. श्याम कुमार झा, डॉ. बबलूपाल एवं जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के भोजपुरी भाषा के वरिष्ठ साहित्यकार तथा हिन्दी भाषा अधिकारी डॉ. राजेश कुमार मौझी एवं संस्कृत विभाग के शोध छात्र उपस्थित रहे।

शोधार्थी गौरव पंवार आईसीएसएसआर डॉक्टोरल फेलोशिप के लिए चयनित



विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के शोधार्थी गौरव पंवार को भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा पी-एच.डी. शोधार्थियों को दी जाने वाली डॉक्टोरल फेलोशिप के लिए चयनित किया गया है। गौरव राजनीति विज्ञान विभाग के सह आचार्य डॉ. नरेन्द्र सिंह के निर्देशन में शोधरत हैं। राजनीति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. राजीव कुमार ने शोधार्थी गौरव की इस सफलता पर उन्हें शुभकामनाएं दी। शोधार्थी गौरव की इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने उन्हें शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह सफलता विभाग एवं विश्वविद्यालय दोनों के लिए गर्व का विषय है। विश्वविद्यालय अनवरत विभिन्न अकादमिक गतिविधियों में अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता से कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। उन्होंने कहा कि आईसीएसएसआर की फेलोशिप के लिए राजनीति विज्ञान विभाग के शोधार्थी का चयन यह सिद्ध करता है कि विश्वविद्यालय के शिक्षक और शोधार्थी शोधकार्य को लेकर गंभीर हैं। वहीं प्रतिकुलपति प्रो. जी गोपाल रेड्डी ने भी शोधार्थी गौरव को शुभकामनाएं दी तथा उनके मंगल भविष्य की कामना की।



महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

मयि श्री: श्रयतां यशः

फरवरी 2022 - मार्च 2022 (संयुक्तांक)

5



लोक आस्था का पर्व छठ पूजा

दीपावली के 6 दिन बाद कार्तिक महीने की षष्ठी यानी छठी तिथि को लोक आस्था का महापर्व छठ मनाया जाता है। सूर्योपासना का यह अनुपम लोकपर्व बिहारवासी बड़े धूम - धाम से मनाते हैं। यह पर्व बिहारीयों का सबसे बड़ा पर्व है और ये बिहार की संस्कृति का हिस्सा है। ये एक मात्र ही बिहार या पूरे भारत का ऐसा पर्व है जो वैदिक काल से चला आ रहा है और ये बिहार की संस्कृति बन चुका है। यह पर्व बिहार की वैदिक आर्य संस्कृति की एक छोटी सी

झलक दिखाता है। छठ पूजा मुख्य: रूप से ऋषियों द्वारा लिखी गई ऋग्वेद में सूर्य पूजन, उषा पूजन और आर्य परंपरा के अनुसार बिहार में यह पर्व मनाया जाता है। नहाए-खाए के साथ शुरू होने वाले इस पर्व में व्रती और महिलाएं 36 घंटे तक निर्जला व्रत रखती हैं एवं छठी मैया की आराधना करती हैं। ऐसी मान्यता है की इस पवित्र व्रत को रखने से सुख और शांति की प्राप्ति होती है, यश, पुण्य और कीर्ति का उदय होता है तथा दुर्भाग्य समाप्त हो जाते हैं।

बिहार की वीरांगनाएं

आज भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जाना जाता है लेकिन यह स्वतंत्रता हमें यूं ही नहीं मिली। इसके लिए न जाने कितने फांसी के फंदे पर झूले थे और न जाने कितनों ने गोली खाई थी, तब जाकर हमने यह आजादी पाई थी। बिहार में हजारों महिलाओं ने आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया था। इन्हें अंग्रेजी साम्राज्यवाद ने अपने अस्तित्व के लिए खतरा माना और दमन का शिकार बनाया। माना जाता है कि इस जंग में बिहार की महिलाओं की हिस्सेदारी 1916-17 से काफी बढ़ी। यही वह वक्त था जब गांधीजी के हाथों में राष्ट्रीय आंदोलनों का नेतृत्व आया। अगस्त 1918 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन बंबई में आयोजित था। इसमें मोंटगु - चेम्सफोर्ड के प्रस्तावों को निराशाजनक बताते हुए बिहार के विख्यात बैरिस्टर हसन इमाम के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल भेजने का निर्णय लिया गया। इसमें हसन इमाम के साथ उनकी पत्नी और बेटी शमी भी गयी थी। अक्टूबर 1921 में हजारीबाग में बिहार के विद्यार्थियों का सम्मेलन हुआ इसकी अध्यक्षता सरला देवी ने की। पटना में अंग्रेज शासन के खिलाफ कई जनसभाएं सावित्री देवी की अध्यक्षता में हुईं, जिसमें श्रीमती सीसी दास और उर्मिला देवी ने भी बढ़चढ़ कर आंदोलनों का नेतृत्व किया। शाहाबाद जिले में राम बहादुर, बार-एट-लॉ की पत्नी ने सासाराम थाने के सामने नमक बनाकर कानून तोड़ दिया था। इसी बीच हजारीबाग जिला कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षा सरस्वती देवी और हजारीबाग कॉलेज में भौतिकी के प्राध्यापक की बेटी साधना देवी गिरफ्तार कर ली गयीं। यह राजनैतिक कार्यों के अपराध में गिरफ्तार होने वाली बिहार की पहली महिलाएं थीं। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी बिहार की महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। पटना स्थित महिला चरखा समिति से जुड़ी महिलाओं ने अगस्त क्रांति को व्यापक बनाने में बड़ा योगदान दिया। पटना के बाहर विभिन्न जिलों में भी महिलाओं ने अगस्त क्रांति में आगे बढ़ कर हिस्सा लिया। 1942 की इस क्रांति में अंग्रेजों ने क्रूरता के साथ उनका दमन किया। बड़े पैमाने पर महिलाएं गिरफ्तार हुईं। इन सब के बावजूद महिलाओं ने बड़ी ही बहादुरी से अंग्रेजी शासन के खिलाफ आंदोलन जारी रखा।



“आम्रपाली” वैशाली की नगरवधू से भिक्षुणी तक का सफ़र

बिहार में एक जिला है जिसका नाम वैशाली है। विश्व को सर्वप्रथम गणतंत्र का पाठ पढ़ाने वाला स्थान वैशाली ही है। यहां की नगरवधू आम्रपाली और यहां के राजाओं के किस्से इतिहास में भरे पड़े हैं। एक खूबसूरत लड़की से नगरवधू बनने और उसके बाद भिक्षुणी बन जाने की यात्रा ने इतिहास को पलट दिया। अपने सौंदर्य की ताकत से कई साम्राज्य को मिटा देने वाली आम्रपाली का जन्म आज से करीब 25 सौ वर्ष पूर्व वैशाली के आम्रकुंज में हुआ था। आम्रपाली के असली माता-पिता के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। उनका लालन-पालन करनेवाले माता-पिता को नवजात आम्रपाली एक आम के पेड़ के नीचे रखी हुई मिली थी। जिसके कारण उनका नाम आम्र (आम) पाली (नए पत्ते) रखा गया। वह वैशाली गणतंत्र के महनामन नामक एक सामंत को मिली थी और बाद में वह राजसेवा से त्याग पत्र देकर आम्रपाली को पुरातात्विक वैशाली के निकट आज के अंबारा गांव चला आया। जब आम्रपाली की उम्र करीब 11 वर्ष हुई तो सामंत उसे लेकर फिर वैशाली लौट आया। 11 वर्ष की उम्र में ही आम्रपाली को सर्वश्रेष्ठ सुंदरी घोषित कर नगरवधू या वैशाली जनपद ‘कल्याणी’ बना दिया गया था। इसके बाद गणतंत्र वैशाली के कानून के तहत आम्रपाली को राजनर्तकी बनना पड़ा।

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान और ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांतों में भी वैशाली गणतंत्र और आम्रपाली पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। दोनों ने लगभग एकमत से आम्रपाली को सौंदर्य की मूर्ति बताया। आम्रपाली न चाहते हुए भी वैशाली की नगरवधू बनकर रहने के लिए मजबूर थी। उस समय राजगृह जाते या वहां से लौटते समय भगवान बुद्ध वैशाली में रुकते थे। एक दिन भगवान बुद्ध के एक शिष्य आम्रपाली के द्वार पर भिक्षा मांगने आए। वह भिक्षुक को अंदर ले गई और उनका पूरा आदर-सत्कार किया। साथ ही कहा कि 3-4 दिन बाद वर्षा ऋतु शुरू होनेवाली है, उस दौरान आप मेरे महल में ही निवास करना। बुद्ध से आज्ञा लेकर वह शिष्य आम्रपाली के घर रहने चला गया। वर्षा ऋतु की समाप्ति के बाद भिक्षुक बुद्ध के पास लौट आया। साथ में आम्रपाली भी थी। बुद्ध के शिष्य के आचरण, सत्य और संयम से प्रभावित हो चुकी आम्रपाली भगवान बुद्ध के चरणों में प्रणाम करते हुए बोली, मुझे भी अपनी शरण में ले लीजिए। उसके समर्पण और मन में छुपे विरक्ति के भाव को देखते हुए भगवान बुद्ध ने उसे अपनी शिष्या बना लिया। बौद्ध धर्म के भिक्षु संघ में प्रवेश पानेवाली आम्रपाली पहली महिला थीं। उनके भिक्षुणी बनने के बाद ही अन्य महिलाओं के लिए बुद्ध के चरणों में आने का मार्ग खुला क्योंकि इससे पहले महिलाओं को भिक्षु संघ में सम्मिलित नहीं किया जाता था।

साहित्यकार : कृतियां

बाणभट्ट	: कादम्बरी, हर्षचरितम्, चंडीशतक
विष्णु शर्मा	: पंचतंत्र, हितोपदेश
चाणक्य	: अर्थशास्त्र
अश्वघोष	: महायान श्रद्धात्पाद संग्रह, बुद्ध चरित, वज्रसूची
आर्यभट्ट	: दशगीतिका, आर्यभटीय और तंत्र
वात्स्यायन	: कामसूत्रम्
विद्यापति	: पदावली, कीर्तिलता, कीर्ति पताका, गौरक्षा विजय, भू परिक्रमा
दाउद	: चंद्रायन
ज्योतिरीश्वर	: वर्ण रत्नाकर, दर्शन रत्नाकर
रामधारी सिंह 'दिनकर'	: प्राणभंग, उर्वशी, रेणुका, द्वन्द्वगीत, हुंकार, रसवंती, चक्रवाल, धूप-छांव, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, सामधेनी, नील कुसुम, सीपी और शंख, परशुराम की प्रतिज्ञा, हारे को हरिनाम
बाबा नागार्जुन	: बाबा बरेश्वरनाथ, हजार हजार बहों वाली, पारो, कुम्भीपाक, तुमने कहा था, वरुण के बेटे, रतिनाथ की चाची, पुरानी जातियों का कोरस, बलचनमा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	: इंडिया डिवाइडेड, चम्पारण में सत्याग्रह, बापू के कदमों में
केदारनाथ मिश्र प्रभात	: ज्वाला, कैकयी, ऋतुवंश, प्रसन्निका
रामवृक्ष बेनीपुरी	: आम्रपाली, माटी की मूर्तें, चिंता के फूल, संघमित्रा



महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

मयि श्री: श्रयतां यशः

फरवरी 2022 - मार्च 2022 (संयुक्तांक)

6

इतिहास के आईने में चंपारण - पौराणिक से लेकर आधुनिक तक



बिहार के सबसे उत्तर में स्थित चंपा की नगरी चम्पारण का नाम चंपा-अरान्या या चंपकटनी से निकला है। चंपा+अरान्या का अर्थ है चंपा पेड़ों का जंगल। कभी चम्पारण का यह क्षेत्र खुशबूदार चंपा के वृक्षों से भरा हुआ था। इन्हीं विशाल घने चंपा के जंगलों और सदाबहार वृक्षों की वजह से इस क्षेत्र का नाम चम्पारण पड़ा। प्राचीन काल से लेकर अब तक चंपारण का इतिहास सम्मानपूर्ण और महत्वपूर्ण रहा है। कहा जाता है कि राजा उत्तानपाद के पुत्र भक्त ध्रुव ने यहां तपोवन नामक स्थान पर ज्ञान प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की थी। जहां एक तरफ देवी सीता के शरणस्थली होने के कारण चंपारण की भूमि पवित्र है, वहीं दूसरी तरफ आधुनिक भारत में गांधीजी का सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास का एक अमूल्य पृष्ठ है। राजा जनक के समय यह तिरहुत राज्य का भाग था। लोगों का मानना है कि जानकीगढ़, जिसे चंचीगढ़ के नाम से भी जाना जाता है, राजा जनक के विदेह राज्य की राजधानी थी। जो बाद में छठी शताब्दी ईसा पूर्व में वैशाली साम्राज्य का हिस्सा बन गया। भगवान बुद्ध ने यहां अपना

उपदेश दिया था, जिसकी याद में यहां प्रियदर्शी अशोक ने स्तंभ और स्तूपों का निर्माण किया था। अजातशत्रु के द्वारा वैशाली को जीते जाने के बाद यह मौर्य वंश, कण्व वंश, शुंग वंश, कुषाण वंश तथा गुप्त वंश के अधीन रहा। बाद में सन् 1213 से 1227 ईस्वी के बीच यहां मुस्लिम शासन स्थापित हुआ। मुसलमानों के अधीन होने पर तथा उसके बाद भी यहाँ स्थानीय राजाओं का सीधा शासन रहा। मुगल काल के बाद के चंपारण का इतिहास बेतिया राज के उदय एवं अस्त से जुड़ा है। बेतिया राज की शान का प्रतीक महल आज भी शहर के मध्य में इसके गौरव का प्रतीक बनकर खड़ा है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत के स्वतंत्रता सेनानी राजकुमार शुक्ल द्वारा बुलाए जाने पर महात्मा गांधी अप्रैल 1917 में मोतिहारी आए और उन्होंने नील फसल की तीन कठिया खेती के विरोध में सत्याग्रह के पहले प्रयोग का सफलतापूर्वक उपयोग किया। यह स्वतंत्रता की लड़ाई में नए चरण की शुरुआत थी। अंग्रेजों ने 1866 में चंपारण को एक स्वतंत्र इकाई बना दिया था, लेकिन 1971 में इसे पूर्वी और पश्चिमी चंपारण में विभाजित कर दिया गया था।

आध्यात्म का केंद्र चंपारण

सोमेश्वर महादेव अरराज

उत्तर बिहार का प्रमुख शिव धाम है, जहां चंद्रमा द्वारा स्थापित शिवलिंग है। कहा जाता है कि जब गौतम ऋषि ने चंद्रमा को शाप दे दिया था तो उन्होंने इससे मुक्ति के लिए यहीं शिवलिंग की स्थापना कर पूजा अर्चना के बाद शापमुक्त हुए थे। यहां सालों भर देश व पड़ोसी देश नेपाल के पर्यटक आते रहते हैं।

ध्रुव लखौरा

राजा उत्तानपाद की यह राजधानी रही है। प्राचीन धर्मग्रंथों की भांने तो राजा उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव ने पिता की गोद में स्थान नहीं पाने के बाद भगवान विष्णु की घोर तपस्या की और खूद भगवान यहां प्रकट होकर बालक ध्रुव को अपनी गोद में बैठाए थे। इसी राजा ध्रुव के नाम पर एक तारे का नाम ध्रुवतारा पड़ा। लखौरा में भी राजा ध्रुव का टीला है, जिसकी खुदाई अभी तक नहीं हो पाई है।

इसके अलावा जिले में आधा दर्जन से ज्यादा कबीरपंथी मठ हैं। वहीं कई अन्य स्थल हैं जिसमें केसरिया का केसरनाथ मंदिर भी है जिसे वैदिक युग का माना जाता है। उक्त सभी स्थलों को विकसित करने की सरकार की योजना है। इस अभियान को गति देने के लिए राज्य सरकार जिले में पर्यटन पदाधिकारी की नियुक्ति कराने जा रही है।

बेदीवन-मधुबन

यह स्थान पिंपरा के पास है जिसे प्राचीन पिप्पली कानन भी माना जाता है जहां पाटलीपुत्र के महान सम्राट चंद्रगुप्त ने जन्म लिया था। वाणक्य ने यहीं पर चंद्रगुप्त को देखा था और उसे अपने साथ ले गए थे। बाद में धनानंद को अपद्वस्थ कर चंद्रगुप्त को पाटलीपुत्र का सम्राट बनाया था।

केसरिया

यह स्थल विश्व पर्यटन मानचित्र पर छाने लगा है। यहां प्रतिदिन बौद्ध धर्म मानने वाले देशों से पर्यटकों के अलावा अन्य यूरोपीय देशों के पर्यटक प्रतिदिन बड़ी संख्या में पहुंचते हैं। यहां विश्व का सबसे ऊंचा व प्राचीन स्तूप है। स्तूप पर मुरलमंडल विहिन भगवान बुद्ध की योग मुद्रा में एक दर्जन से ज्यादा प्रतिमाएं हैं।



चंपारण के स्वातंत्र्य वीर

स्व. श्री कृष्णदेव चौधरी (आम - प्रसन्न, चंपारण - राज नृसिंह)
स्व. श्री सत्यनारायण शर्मा (आम - कृष्ण, प्रसन्न - विष्णु)
स्व. श्री कपिलदेव नारायण सिंह (आम - महकटिया, प्रसन्न - दाका)
स्व. श्री गोरख दूबे (आम - रदौरा, प्रसन्न - अहेवाल)
स्व. श्री नरसिंह दूबे (आम - रदौरा, प्रसन्न - अहेवाल)
स्व. श्री हरिहर प्रसाद सिंह (आम - अजमली)
स्व. श्री चंद्रगोकुल सिंह (आम - महकटिया)
स्व. श्री द्वारिका साहू (आम - मोरवावा)
स्व. श्री गणेश राय (आम - राय धुवा)
जल्लू राय (आम - महकटिया)
छोटू प्रसाद (आम - कटिया)
नानोभद्रत पाठक (आम - राजकटिया)
दुर्गा उपाध्याय (आम - इलाहाबाद)
सुनोभद्रत पाठक (आम - राजकटिया)
परशुराम दूबे (आम - अजमली)
विनोद मिश्रा (आम - नवलपरासी)
रानी कुंवर (आम - कटिया)
कमल प्रसाद (आम - मोरवावा)
स्व. श्री हरिहर सिंह (आम - महकटिया)
पीर मोहम्मद अंसारी (अजमली)
मो. मो. सिंह
वैद्यनाथ प्रसाद
धनपत राय
दोलात सिंह
जयनाराय शर्मा
सुखलाल सिंह
राजकुमार शुक्ल (आम - नवलपरासी)
जगत नारायण झा (आम - कुंवर का पति)
वत्सल मिश्रा (आम - अजमली)

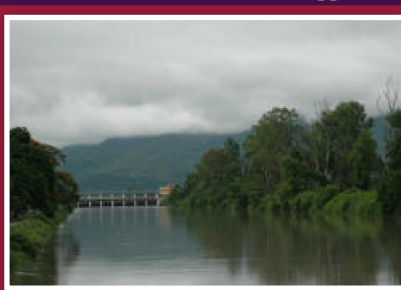
ज्योति देवी (अजमली)
सुमित्रा देवी (अजमली)
रामविहारी शर्मा (अजमली)
रामदयाल प्रसाद (कटिया, पूर्वी चंपारण)
स्व. श्री गणेश राय (आम - राय धुवा)
ललित देवी (अजमली, पूर्वी चंपारण)
जनक महतो (पौरा, पूर्वी चंपारण)
शेरस गुलाब (आम - साठी बांद बरवा)
शेरस गुलाब अली (आम - साठी बांद बरवा)
जनादन पांडे
लालन मिश्रा (कुशीनारी)
सुमान मिश्रा (कुशीनारी)
सुखनंदन झा (कुशीनारी)
अक्षयवर मिश्रा (कुशीनारी)
परमार्जुन मिश्रा (कुशीनारी)
अयोध्यानाथ मिश्रा (कुशीनारी)
पीर मोहम्मद मुनीरा (अजमली)
डॉ. लंबोदर मुखर्जी (अजमली)
पार्वती देवी (अजमली, अजमली)
कमल देवी (अजमली, अजमली)
मो. आशिफ (अजमली, अजमली)
यमुना राम (अजमली, अजमली)
उषा रानी मुखर्जी (अजमली)
स्व. श्री द्वारिका साहू (आम - मोरवावा)
किशोरी देवी (अजमली, पूर्वी चंपारण)
रत्नलाल देवी (अजमली, अजमली)
लालन देवी (अजमली, अजमली)
रामजी साहू (अजमली, अजमली)
गोपाल सिंह नेपाली (अजमली)

वाल्मिकीनगर आश्रम और गंडक परियोजना



वाल्मिकीनगर राष्ट्रीय उद्यान के एक छोर पर महर्षि वाल्मिकी का वह आश्रम है जहाँ राम के त्याग जाने के बाद देवी सीता ने आश्रय लिया था। सीता ने यहीं अपने दोनों पुत्र 'लव' और 'कुश' को जन्म दिया था। महर्षि वाल्मिकी ने हिंदू महाकाव्य रामायण की रचना भी यहीं की थी। आश्रम के मनोरम परिवेश के पास ही गंडक नदी पर बनी बहुदेशीय परियोजना है जहाँ १५ मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है और यहाँ से निकाली गयी नहरें चंपारण के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के बड़े हिस्से में सिंचाई की जाती है। गंडक बैराज के आसपास का शांत परिवेश चित्ताकर्षक है। बेतिया राज द्वारा बनवाया गया शिव-पार्वती मंदिर भी दर्शनीय है।

वाल्मिकीनगर राष्ट्रीय उद्यान एवं बाघ अभयारण्य



लगभग ८८० वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैला बिहार का एक मात्र राष्ट्रीय उद्यान नेपाल के राजकीय चितवन नेशनल पार्क से सटा है। बेतिया से ८० किलोमीटर दूर वाल्मिकीनगर के इस राष्ट्रीय उद्यान का भीतरी ३३५ वर्ग किलोमीटर हिस्से को १९९० में देश का १८ वाँ बाघ अभयारण्य बनाया गया। हिरण, चीतल, साँभर, तेंदुआ, नीलगाय, जंगली बिल्ली जैसे जंगली पशुओं के अलावे चितवन नेशनल पार्क से एकसिंगी गैंडा और जंगली भैंसा भी उद्यान में दिखाई देते हैं।

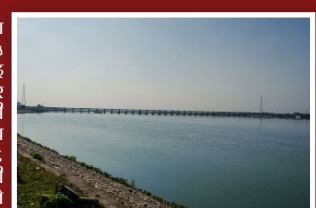


नन्दनगढ़, चानकीगढ़ एवं लौरिया का अशोक स्तंभ

लौरिया प्रखंड के नन्दनगढ़ तथा नरकटियागंज प्रखंड के चानकी गढ़ में नंद वंश तथा चाणक्य के द्वारा बनवाए गए महलों के अवशेष हैं जो अब टीलेनुमा दिखाई देते हैं। नन्दनगढ़ के टीले को भगवान बुद्ध के अस्थि अवशेष पर बना स्तूप भी कहा जाता है। नन्दनगढ़ से एक किलोमीटर दूर लौरिया में २३०० वर्ष पुराना सिंह के शीर्ष वाला अशोक स्तंभ है। इस विशाल स्तंभ की कलाकृति एवं बेहतरीन चमक मौर्य काल के मूर्तिकारों की शानदार कलाकारी का नमूना है।

त्रिवेणी संगम तथा बावनगढ़ी

एक ओर नेपाल का त्रिवेणी गाँव तथा दूसरी ओर चंपारण का भैसातोहन गाँव के बीच नेपाल की सीमा पर वाल्मिकीनगर से ५ किलोमीटर की दूरी पर त्रिवेणी संगम है। यहाँ गंडक के साथ पंचनद तथा सोनहा नदी का मिलन होता है। श्रीमद्भगवत पुराण के अनुसार विष्णु के प्रिय भक्त 'गज' और 'गाह' की लड़ाई इसी स्थल से शुरू हुई थी जिसका अंत छात्रपुर के निकट कोनहार घाट पर हुआ था। हरिद्वेश्वर की तरह प्रत्येक वर्ष माघ संक्रांति को यहाँ मेला लगता है। त्रिवेणी से ८ किलोमीटर दूर लगभग २ प्रखंड के दूलाबारी गाँव के पास बावनगढ़ी किले का खंडहर मौजूद है। पास ही तिरपन बाजार है। इस प्राचीन किले के पुरातात्विक महत्व के बारे में तथ्यपूर्ण जानकारी का अभाव है।





महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

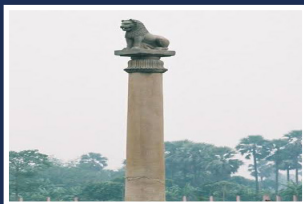
75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

मयि श्री: श्रयतां यशः

फरवरी 2022 - मार्च 2022 (संयुक्तांक)

7

पर्यटक स्थल



अशोक स्तंभ, वैशाली

राजा अशोक कलिंग के नरसंहार के पश्चात बौद्ध धर्म के अनुयायी बन गए थे। उन्होंने वैशाली में प्रसिद्ध अशोक स्तंभ बनवाया था। यह स्तंभ वैशाली में हुए भगवान बुद्ध के अंतिम उपदेश को याद करने के लिए था। उत्तर की ओर मुख किए हुए स्तंभ के शीर्ष पर भगवान बुद्ध की अंतिम यात्रा की दिशा के रूप में माना जाता है। एक सिंह की जीवन जैसी आकृति जो निर्दोष रूप से उकेरी गई है। धूल के बगल में एक ईंट का स्तूप और एक तालाब है। उस को समकुंड के नाम से जानते हैं। वह स्थल बौद्धों के लिए पवित्र स्थान है।

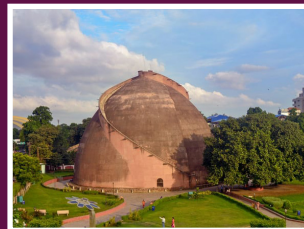
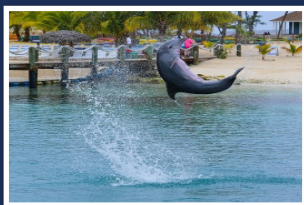
ब्रह्मकुंड, राजगीर

वैभल पर्वत की सीढ़ियों पर मंदिरों के बीच गर्म जल के कई झरने (सप्तधाराएं) हैं जहां सप्तकर्णी गुफाओं से जल आता है। इन झरनों के पानी में कई चिकित्सकीय गुण होने के प्रमाण मिले हैं। पुरुषों और महिलाओं के नहाने के लिए 22 कुण्ड बनाए गए हैं। यहां बिम्बिसार का बंदीगृह, गिरियक स्तूप, मनियार मठ, विपुलाचल पर्वत (जैन मंदिर), जैसे घुमने और आनंद लेने के लिए कई जगह हैं।



विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभयारण्य

विक्रमशिला गंगातमक डॉल्फिन अभयारण्य गंगा नदी पर स्थित क्षेत्र का 50 किलोमीटर क्षेत्र है। अभयारण्य बिहार राज्य के भागलपुर जिले में स्थित है। अभयारण्य में पाए जाने वाले डॉल्फिन की प्रजातियों को वर्ष 2006 में आईयूसीएन द्वारा लुप्तप्राय के रूप में वर्गीकृत किया गया था। वनस्पतियों की विभिन्न जलीय प्रजातियां हैं और विक्रमशिला गंगा के डॉल्फिन अभयारण्य में पाए जाने वाले जीव (डॉल्फिन के अलावा) अन्य प्रजातियों में घड़ियाल, भारतीय चिकना कोरेड ओडर और कछुए शामिल हैं। अभयारण्य अपने प्राकृतिक आवास में इन शानदार प्राणियों के अध्ययन के लिए एक उपयोगी संसाधन के रूप में कार्य करता है।



गोलघर, पटना

गोलघर बिहार के राजधानी पटना की पहचान है। गोलघर हमेशा से ऐतिहासिक धरोहर के रूप में पटना को गौरान्वित करती रही है। इस विशाल इमारत की खास बात यह है कि इसके निर्माण में पिलर का इस्तेमाल नहीं किया गया है। बिना किसी पिलर के बने होने के कारण इसकी दीवार की मोटाई 3.6 रखा गयी है। गोलघर के निर्माण के पीछे अंग्रेजों की दूरगामी सोच थी।

विष्णुपद मंदिर, गया

मोक्षदायिनी फल्गु किनारे स्थित भगवान विष्णु के चरण चिह्न वाला विष्णुपद मंदिर दर्शन-पूजन के साथ ही पिंडदान के लिए विशेष महत्व रखता है। इसे धर्मशिला के नाम से भी जाना जाता है। ऐसी भी मान्यता है कि पितरों के तर्पण के पश्चात इस मंदिर में भगवान विष्णु के चरणों के दर्शन करने से समस्त दुखों का नाश होता है एवं पूर्वज पुण्यलोक को प्राप्त करते हैं। विष्णुपद मंदिर में भगवान विष्णु का चरण चिह्न ऋषि मरीची की पत्नी माता धर्मवता की शिला पर है। राक्षस गयासुर को स्थिर करने के लिए धर्मपुरी से माता धर्मवता शिला को लाया गया था, जिसे गयासुर पर रख भगवान विष्णु ने अपने पैरों से दबाया। इसके बाद शिला पर भगवान के चरण चिह्न हैं।



राजगीर

राजगीर बिहार राज्य के नालान्दा जिला में स्थित एक ऐतिहासिक नगर है, जिसे पहले राजगृह के नाम से जाना जाता था। यह शहर अपने प्राकृतिक खूबसूरत नजारों से घिरा हुआ है। हरी-भरी घाटी घने जंगलों, रहस्यमयी गुफाओं तथा चट्टानी पर्वतों में झरनों के बीच प्राकृतिक शांति वाला एक आध्यात्मिक शहर है। यहां बिम्बिसार का बंदीगृह, गिरियक स्तूप, मनियार मठ, विपुलाचल पर्वत (जैन मंदिर), जैसे घुमने और आनंद लेने के लिए कई मनोरम जगह हैं।



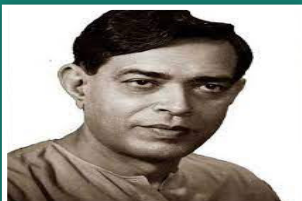
यह वहीं पर्वत है जहाँ बुद्ध ने कई महत्वपूर्ण उपदेश दिये थे। जापान के बुद्ध संघ ने इसकी चोटी पर एक विशाल "शान्ति स्तूप" का निर्माण करवाया था और इस स्तूप के चारों कोणों पर बुद्ध की चार प्रतिमाएँ हैं। यह पर्वत पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। गर्म जल के झरने

वैभारगिरी पर्वत की सीढ़ियों पर मंदिरों के बीच गर्म जल के कई झरने (सप्तधाराएं) हैं जहां सप्तकर्णी गुफाओं से जल आता है। इन झरनों के पानी में कई चिकित्सकीय गुण होने के प्रमाण मिले हैं। यहां लोगों के नहाने के लिए 22 कुण्ड बनाए गए हैं।

बिहार के रचनाकार

रामधारी सिंह दिनकर

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म बिहार के बेगुसराय जिले के सिमरिया गांव हुआ था। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। दिनकर स्वतन्त्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद राष्ट्रकवि के नाम से जाने गये। दिनकरजी को उनकी रचना कुरुक्षेत्र के लिये काशी नगरी प्रचारिणी सभा, उत्तरप्रदेश सरकार और भारत सरकार से सम्मान मिला। "संस्कृति के चार अष्टयात्र" के लिये उन्हें 1959 में साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद ने उन्हें 1959 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया।



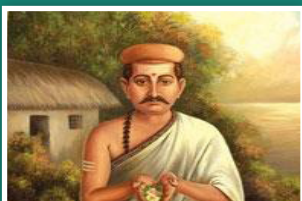
फणीश्वरनाथ रेणु

हिंदी साहित्य के प्रख्यात आंचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म बिहार के पूर्णिया जिले के औराही हिंगना गाँव में हुआ था। वे हिन्दी भाषा के सुप्रसिद्ध साहित्यकार थे जिन्होंने भारत के स्वाधीनता संघर्ष में भाग लिया था। उन्होंने वास्तविक आंचलिकता की एक नई राह पर हिंदी उपन्यास कथा का नेतृत्व किया।



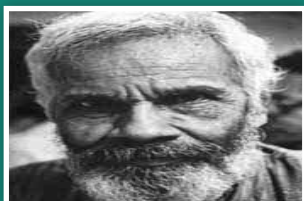
विद्यापति

विद्यापति का जन्म बिहार के दरभंगा के विपरी गांव में हुआ था। वे भारतीय साहित्य की भक्ति परंपरा के प्रमुख स्तंभों में से एक एवं मैथिली के सर्वोपरि कवि के रूप में जाने जाते हैं। इन्हें वैष्णव और शैव भक्ति के सेतु के रूप में भी स्वीकार किया गया है। महाकवि विद्यापति संस्कृत, अवहट्ठ, मैथिली आदि अनेक भाषाओं के प्रकाण्ड पंडित थे। विद्यापति ने हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम 'कृष्ण' को काव्य का विषय बनाया।

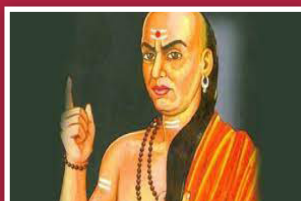


नागार्जुन

नागार्जुन का जन्म 30 जून, 1911 को मधुबनी जिले के सतलखा गाँव में हुआ था। नागार्जुन एक कवि होने के साथ ही उपन्यासकार भी थे। इनको काव्य संग्रह 'पत्रहीन नख गाछ' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

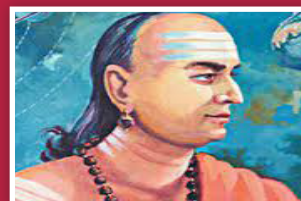


बिहार की ऋषि परम्परा



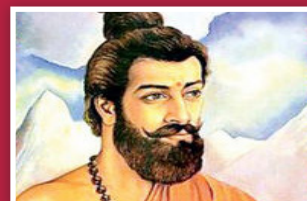
चाणक्य

चाणक्य का जन्म लगभग 350 ईसा पूर्व में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका मूल नाम विष्णु गुप्त था और उन्हें कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता है।



वराहमिहिर

वराहमिहिर का जन्म 505 ईस्वी में हुआ था। वराहमिहिर (वर-मिहिर) ईसा की पाँचवीं-छठी शताब्दी के भारतीय गणितज्ञ एवं खगोलज्ञ थे।



ऋषि विश्वामित्र

विश्वामित्र ने भगवान शिव से अन्न विद्या प्राप्त किए थे। माना जाता है कि आज के युग में प्रचलित प्रश्नोत्तर या मिसाइल प्रणाली हजारों साल पहले विश्वामित्र ने ही खोजी थी। तपस्वी ऋषि विश्वामित्र ही ब्रह्म गायत्री मंत्र के दूध माने जाते हैं। शरीर सहित त्रिशंकु को स्वर्गे भेजने का चमत्कार भी विश्वामित्र ने तपोबल से कर दिखाया। विश्वामित्र का आश्रम बनारस में था।



महर्षि गौतम

महर्षि गौतम सप्तर्षियों में से एक हैं। वे वैदिक काल के एक महर्षि एवं मन्त्रद्वष्टा थे। ऋग्वेद में उनके नाम से अनेक सूक्त हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार उनकी पत्नी अहिल्या थीं जो प्रातःकाल स्मरणीय पंच कन्याओं गिनी जाती हैं। हनुमान की माता अंजनी गौतम ऋषि और अहिल्या की पुत्री थीं। दैत्य गुरु शुक्राचार्य ने देवताओं द्वारा तिरस्कृत होने के बाद अपनी दीक्षा गौतम ऋषि से पूर्ण की थी। ऋषिओं के इश्यां वश गोहत्या का झूठा आरोप लगाने के बाद बारह ज्योतिर्लिंगों में महत्वपूर्ण त्रयमलेश्वर महादेव नाशिक भी गौतम ऋषि की कठोर तपस्या का फल है जहाँ गंगा माता गौतमी अथवा गोदावरी नाम से प्रकट हुई।

लोगों के दिलों पर राज करते हैं बिहारी कलाकार

बिहार ने तो युं बड़े-बड़े हस्तियों को जन्म दिया है चाहे वो राजनीति का क्षेत्र हो या शिक्षा का क्षेत्र, मीडिया जगत हो या फिर बॉलीवुड हर जगह बिहारियों का जलवा कायम है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से लेकर देश का संविधान बनाने तक में बिहारियों का अहम योगदान रहा है। ऐसे कुछ कलाकार जिन्होंने बिहार का नाम विश्व पटल पर अंकित किया है और इन बिहारी कलाकारों ने न केवल बॉलीवुड में इंद्री ली बल्कि लोगों के दिलों पर राज भी करते हैं।



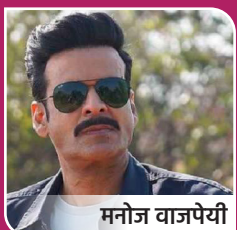
शशुल सिन्हा

बिहारी बाबू के नाम से लोकप्रियता हासिल करने वाले शशुल सिन्हा बिहार के पटना जिला के निवासी हैं। पूर्ण फिल्म इंस्टीट्यूट से कोर्स कंप्लीट करने के बाद उन्हें उनके कटे होठ के कारण खुद को सावित करने का मौका काफी देर से मिला। उनकी पहली फिल्म "साजन" 1969 में आई और उसके बाद उन्होंने-दीवाना हूं पागल नहीं, क्रांति, रणभूमि, और रक्त चरित्र जैसी कई फिल्मों की जो जबरदस्त हिट रही। इन्हीं हिट फिल्मों के कारण बॉलीवुड में इन्हें "शॉर्ट गन" और "बिहारी बाबू" जैसे नाम दिए गए। और इनकी सबसे फेमस डॉयलोग 'खामोश' थी जो आज तक बॉलीवुड के कानों में गुंजती है। लेकिन अब सिन्हा साहब बॉलीवुड से दूर राजनीति में सक्रिय हैं।



प्रकाश झा

प्रकाश झा का जन्म बिहार के चंपारण जिला में हुआ था। झा अपने कैरियर की शुरुआत एक पेंटर के रूप में करना चाहते थे। लेकिन जब वे दिल्ली आए तो 'धर्म' फिल्म की शूटिंग देखने के बाद उन्होंने बॉलीवुड में काम करने की ठानी। 1973 में उन्होंने फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट में दाखिला लिया। उन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'द ब्लू' से किया जिसके बाद उन्होंने कई डॉक्यूमेंट्री फिल्में बनाई। प्रकाश झा को पहला नेशनल फिल्म अवार्ड उनकी शॉर्ट मूवी के लिए मिला था जिसे उन्होंने बिहार के दंगे पर फिल्माया था। लेकिन इस शॉर्ट मूवी को बैन कर दिया गया। उसके बाद 29 अगस्त 2003 में आई फिल्म 'गंगाजल' जो सुपर डुपर हिट रही थी फिर उन्होंने अपहरण, राजनीति, आरक्षण, सत्याग्रह और जय गंगाजल जैसी हिट फिल्में बनाई।



मनोज वाजपेयी

मनोज वाजपेयी का जन्म भी बिहार के चंपारण जिले के एक छोटे से गांव बेलवा में हुआ था। वाजपेयी ने अपने कैरियर की शुरुआत 1994 में शेखर कपूर की फिल्म 'बैडिट किन' से की और 1998 में रामगोपाल वर्मा की फिल्म 'सत्या' ने उन्हें बुलंदियों पर पहुंचा दिया। उसके बाद उन्होंने-स्पेशल 26, शूट आउट एट वडाला, सत्याग्रह, ट्रैफिक और अलीगढ़ जैसी फिल्मों की जो बड़े पर्दे पर हिट रही। मनोज वाजपेयी हर रोल में फिट बैठते हैं चाहे उन्हें पोजिटिव रोल मिला हो या निगेटिव। हर रंग में वे बॉलीवुड के दिलों पर राज करते हैं।



संजय मिश्रा

संजय मिश्रा का जन्म पटना में हुआ था। उन्होंने नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से बैचलर की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने फिल्मों में एक कॉमिडीयन के रूप में अपनी खास पहचान बनाई है। संजय मिश्रा की पहली फिल्म 'ओह डार्लिंग ये है इंडिया' थी जिसमें उन्होंने एक छोटे सा रोल कर दर्शकों का दिल जीत लिया था। संजय मिश्रा को एक टीवी सीरियल "ऑफिस-ऑफिस" में शुक्ला जी के किरदार ने भी काफी लोकप्रियता दिलाई। उसके बाद उन्होंने-सत्या, दिल से, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी, गोलमाल रिटर्न्स, गोलमाल 3, फस गए र ओबामा और क्रिक जैसी हिट फिल्मों में काम किया।



पंकज त्रिपाठी

बिहार के सबसे मशहूर कलाकारों में से एक नाम पंकज त्रिपाठी का भी आता है। जिनको लोग मिर्जापुर के सबसे टॉप कलाकार कालीन भैया के नाम से जानने लगे हैं। उनका जन्म बिहार के गोपालगंज जिले में हुआ था। पंकज ने शुरूआती पढ़ाई पटना से की है। उन्होंने कॉलेज के दिनों से पटना के थिएटर में एक्टिंग करना प्रारंभ कर दिया था। उसके बाद उन्होंने अभिनय का प्रशिक्षण लेने के लिए नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में दाखिला ले लिया।



महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

मयि श्री: श्रयतां यशः

फरवरी 2022 - मार्च 2022 (संयुक्तांक)

8



बिहार का महापर्व छठ पूजा



महात्मा गांधी सत्याग्रह स्मारक, मोतिहारी



महात्मा गांधी सेतु, पटना



बुद्ध स्मृति पार्क, पटना



गोलघर, पटना



केसरिया बौद्ध स्तूप, पूर्वी चंपारण



गांधी भवन परिसर, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय



बिहार का व्यंजन लिटी चोखा



प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय



संपादकीय

मुख्य संरक्षक

प्रो. संजीव कुमार शर्मा
माननीय कुलपति

संरक्षक

प्रो. जी. गोपाल रेड्डी
माननीय प्रति कुलपति

मार्गदर्शक

प्रो. राजीव कुमार
प्रो. विकास पारीक
डॉ. अंजनी कुमार झा

संपादक

डॉ. साकेत रमण

सलाहकार संपादक

प्रो. पवनेश कुमार
डॉ. नरेंद्र सिंह
डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र
डॉ. सुनील दीपक घोड़के
डॉ. उमा यादव
सुश्री शेफालिका मिश्रा

डिजाइन - लेआउट

जाह्नवी शेखर

समाचार संपादन

शशिरंजन कुमार मिश्रा
विकाश कुमार
आशीष कुमार

विद्यार्थी संपादक

शिवानी सिंह
स्वीटी कोमल
रोशनी मिश्रा
अंकिता कुमारी
आस्था रानी
सोनाली सिंह
राहुल कुमार
आकाश राज
अंजलि चौधरी

प्रकाशक : कुलसचिव, महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय



विश्व शांति स्तूप, राजगीर



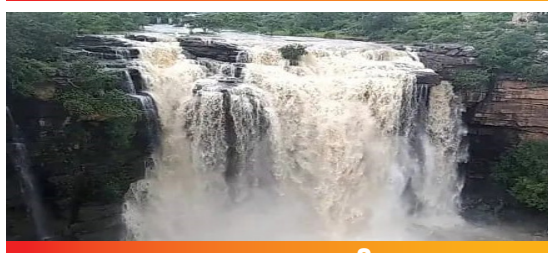
बापूधाम रेलवे स्टेशन, मोतिहारी



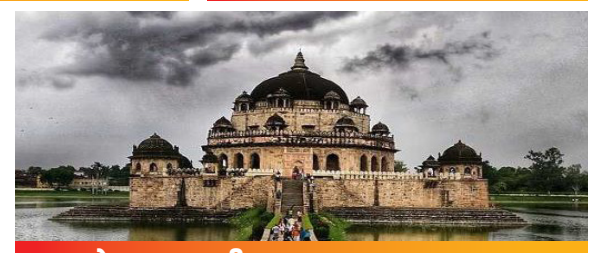
सोमेश्वरनाथ महादेव, अरेराज



महाबोधि मन्दिर, बोध गया



जलप्रपात, राजगीर



शेर शाह सूरी का मकबरा, सासाराम



द्वेनसांग मेमोरियल हॉल, नालंदा



अशोक स्तम्भ, कोल्लुआ, वैशाली



चरखा पार्क, मोतिहारी